उपसंहार

उपसंहार

हिंदी साहित्य की प्रख्यात लेखिका चित्रा मुद्गल एक मूर्धन्य कथा साहित्यकार के रूप में जानी जाती है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखकर यह निर्देशित होता है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू साहित्य में प्रतिबिंबित हुए हैं। उनका व्यक्तित्व साधारण होते हुए भी असाधारण है। चित्रा का समृद्ध व्यक्तित्व उनके सफल जीवन का द्योतक है। उनकी कहानियाँ समाज का पूरा यथार्थ तथा विदारक चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनके व्यक्तित्व की भांति उनका कृतित्व अनेक आयामों को उद्घाटित करता है। अनुभवों का विपुल भंडार पास होने के कारण परिवेश की यथार्थता का जीता-जागता लेखा-जोखा उनके साहित्य के माध्यम से हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। संवेदनशीलता, मानवतावादी, निरहंकारी, सुधारवादी दृष्टिकोण आदि विशेषताओं के कारण हिंदी साहित्य आकाश में उन्होंने अपनी अलग अस्मिता बनाई है। 'स्वधार', 'जागरण' जैसी संस्थाओं से जुड़ी होने के कारण वह नारी चेतना की पक्षधर रही हैं। आगे चलकर यह नारी चेतना स्त्री विमर्श का अद्भूत आख्यान 'आवां' में परिलक्षित हुआ दिखाई देता है। अनेक पहलुओं से उजागर उनका व्यक्तित्व पाठकों को आकर्षित करता है। यही उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की झलक दिखाई देती हैं।

द्वितीय अध्याय के अध्ययन से ये निष्कर्ष सामने आते है कि इन दो कहानी संग्रहों की कहानियों में विभिन्न नारी-समस्याओं को प्रस्तुत किया है। नारी की अस्मिता, संघर्ष, त्रासदी जैसी अनेक समस्याएँ सामने आती हैं। प्रत्येक कहानी की कथावस्तु की भाषा सहज-सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। एक के बाद एक घटना को श्रृंखलाबद्ध कड़ियों में शब्दबद्ध किया है। प्रत्येक कहानी की कथावस्तु रुचिपूर्ण है। साथ ही पढ़ते वक्त जिज्ञासा उत्पन्न करती है। विवेच्य दो कहानी संग्रहों में कुलमिलाकर 22 कहानियाँ है। प्रत्येक कहानी की कथावस्तु नये सिरे से सामने आती है। 'अपनी वापसी' जैसी कहानी द्वारा कुंठित नारी की मनोवैज्ञानिकता

को प्रस्तुत कर अंत में उसके जीवन की **नई चेतना** को जगाया है। कहानी की खासियत यही है कि प्रत्येक पात्र समस्याओं से, कुंठाओं से ग्रस्त है। फिर भी जिंदगी से तंग नहीं आता बल्कि किसी नये विचार के साथ नये अंदाज से जीने का प्रयास करता है। 'जगदंबा बाबू गांव आ रहे हैं' तथा 'बंद', 'पेशा' आदि कहानियों द्वारा सामाजिक अव्यवस्था तथा पाखंडी राजनेताओं की स्वार्थी वृत्ति को चित्रित किया है। 'जिनावर', 'लकडबग्धा', 'त्रिशंकु', 'अनुबन्ध' आदि कहानियों द्वारा स्वार्थ लोलुपता, आर्थिक विषमता, अभावग्रस्त किशोरवयीन लड़के की कुंठित मानसिकता आदि को चित्रा ने अंकित किया है। 'भूख' इस कहानी द्वारा भूख की भयावह समस्या द्वारा मनुष्य की अमानुषता को दर्शाया है। 'प्रेतयोनि', 'लकडबग्धा', 'शून्य', 'दुलहीन'आदि कहानियों में नारी अस्मिता, स्त्री शिक्षा, 'स्व' की दृढता स्वतंत्र अस्तित्वपरक चेतना को प्रस्थापित किया है। 'मामला आगे बढ़ेगा अभी', 'त्रिशंकु', 'केंचुल', 'भूख' आदि कहानियों में झुग्गी-झोपडियों में रहनेवाले लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी बेकारी नारी संघर्ष आदि को चित्रा ने चित्रित किया है। 'मोर्चे पर', 'बावजूद इसके', 'शून्य' आदि कहानियों में चित्रा ने विधवा, परित्यक्त्या नारी की घूटन, त्रासदी, कुंठित मानसिकता, त्रासदी को परिलक्षित किया है। दांपत्य जीवन में आयी टूटन को भी दर्शाया है। इस प्रकार विभिन्न परिवेश तथा अनेक पात्रों द्वारा परिवेश की सूक्ष्म और यथार्थ स्थितियों की अभिव्यक्ति करना चित्रा की कहानियों का लक्ष्य रहा है।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याओं का अध्ययन किया गया है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी संग्रह में राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, नारी विषयक सभी समस्याओं को अंकित किया है। सामाजिक समस्या के अंतर्गत बंद की समस्या, प्राणियों के शोषण की समस्या, अमानवीयता की समस्या, बेरोजगारी तथा बेकारी की समस्या, नैतिक मूल्यों में गिरावट की समस्या आदि समस्याओं को उद्घाटित किया है। राजनीतिक समस्या के अंतर्गत राजनेताओं द्वारा गरीब जनता को शोषण को दर्शाया है। पारिवारिक

समस्या के अंतर्गत दांपत्य जीवन में बिखराव, द्विभार्या समस्या, परिवार नियोजन समस्या, पिता-पुत्र के रिश्तों में दरारें, अहम् के कारण पारिवारिक दूरियाँ आदि समस्याओं को उठाया है। आर्थिक समस्या के अंतर्गत भूख की भयावह समस्या, जायदाद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, गरीबी की समस्या, झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले लोगों की अभावग्रस्त जिंदगी की समस्या को लिया गया है। नारी समस्या के अंतर्गत चेतित नारी की समस्या, नौकरीपेशा नारी की समस्या, विधवा की समस्या, परित्यक्त्या नारी की समस्या, नारी शिक्षा की समस्या आदि समस्याओं को उद्घाटित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में विवेच्य कहानियों के कथ्यों का विवेचन किया है। चित्रा ने जिस प्रकार विभिन्न समस्याओं को लिया है उसी प्रकार उन समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न कथ्यों को भी परिप्रेक्षित किया है। चित्रा ने अधिकतर दांपत्य जीवन में आयी रिक्तता, टूटन को प्रस्थापित किया है। साथ ही बदलते परिवेश के कारण महानगरीय लोगों में हो रही पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट को प्रस्तुत किया है। किशोरवयीन लड़के की कुंठित मनोव्यथा, कुंठित नारी की मनोवैज्ञानिकता, युवावर्ग की कुंठावस्था, बेरोजगारी, मकान की समस्या आदि कथ्यों को उठाया है। सामाजिक असुरक्षा, हड़ताल की समस्या, अमानवीयता, स्वार्थांधता, पति-पत्नी के संबंधों में बिखराव, आर्थिक विषमता आदि कथ्यों को भी परिप्रेक्षित किया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में चित्रा की कहानियों के विभिन्न कथ्यों को परिप्रेक्षित किया है।

पंचम अध्याय में विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन किया है। चित्रा की कहानियों की यह विशेषता है कि उनकी कहानियाँ अनेक आयामों को उद्घाटित करती हैं। उद्देश्य की व्यापकता भी उनकी कहानियों में दिखाई देती है। इन कहानियों में कथानक की दृष्टि से विविधता पायी जाती है। कथावस्तु के गठन में सुगठता तथा सुसंघटितता दिखाई देती है। चरित्र चित्रण की दृष्टि से देखा जाय तो विभिन्न पात्रों का चयन लेखिका ने किया है। मानसिक द्वंद्व तथा पीड़ा

को बारीक़ी से लेखिका ने प्रस्तुत किया है। अत: लेखिका ने पात्रों का चरित्र-चित्रण मार्मिक रूप से किया है। संवादों का प्रयोग कम मात्रा में हुआ है। अत: जितने भी संवाद हैं उनका उचित प्रयोग हुआ है। उन संवादों ने ही कथानक को प्रवाहित बनाया है। इस कारण चरित्र-चित्रण को उद्‌घाटित करने में सफलता मिलती है। देशकाल तथा वातावरण का चित्रण करने में लेखिका को काफी सफलता मिली है। ग्रामीण परिवेश तथा झोपडपट्टी का चित्रण, महानगरीय परिवेश अधिक मात्रा में उभरकर आया है। भाषाशैली की दृष्टि से देखा जाय तो चित्रा की कहानियों में विविध भाषाओं का प्रयोग हुआ है। जिससे इनकी कहानियाँ आकर्षक तथा सार्थक बनी हैं। लेखिका ने शैली के अनेक रूपों का प्रयोग इन कहानियों में किया है। जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि शिल्प की दृष्टि से यह कहानियाँ सफलता की चोटी पर पहुँची है। शीर्षक के बारे में कहा जाए तो किसी भी कहानी का शीर्षक उलझन से भरा नहीं है। सभी कहानियों के शीर्षक घटना, कथानक, भाव के आधार पर दिये गए हैं। विवेच्य कहानियों में सभी तत्त्वों का प्रयोग कम अधिक मात्रा में सफलतापूर्वक किया है। इसी आधार पर यह कहा जा सकता है कि विवेच्य कहानियों का शिल्प अत्यंत आकर्षक, सुगठित तथा सुंदर रहा है। उसी कारण ये कहानियाँ और प्रभावशाली बन गई हैं।

प्रस्तुत प्रबंध की उपलब्धियाँ :

1. चित्रा ने अपनी कहानियों के माध्यम से विभिन्न परिवेश से जुड़ी नारी के अधिकार, अस्तित्वपरक चेतना को जागृत किया है।
2. युवा वर्ग की कुंठावस्था, बेकारी, महानगरीय बदलती समस्याएँ, मूल्य विघटन, झुग्गी-झोपड़ी में रहनेवाले लोगों के अभावग्रस्त जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।
3. राजनीतिक नेताओं की स्वार्थांधता, पाखंडी वृत्ति का अंकन किया है।
4. आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण नैतिक मूल्यों में आए परिवर्तन, दांपत्य जीवन में आए बिखराव का चित्रण किया है। साथ ही परिवर्तन के नए संकेत भी प्रस्थापित किये हैं।

5. सामाजिक असुरक्षा, आर्थिक विषमता, भूख, गरीबी, अभावग्रस्त जिंदगी का यथार्थ चित्रण किया है। शोषित मजदूरों के लिए सुधारवादी दृष्टिकोण देने का महत्त्वपूर्ण कार्य चित्रा ने किया है।
6. मानवता का समान अधिकार, लोकमंगल की भावना आदि विचारों को भी प्रस्तुत किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

चित्रा मुद्गल के साहित्य पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है –

1. चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी अस्मिता ।
   ('ग्यारह लंबी कहानियाँ ' तथा 'चर्चित कहानियाँ ' के विशेष संदर्भ में)
2. चित्रा मुद्गल की कहानियों में बदलते आयाम ।
   ('ग्यारह लंबी कहानियाँ ' तथा 'चर्चित कहानियाँ ' के विशेष संदर्भ में)

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं, जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

❑❑❑❑